सामुदायिक सहभागिता

ग्रामीण परिवेश में सबसे अधिक समस्या छात्रों को विद्यालय तक ले जाने की है। अभियान चलाकर यदि छात्रों का विद्यालय में नामांकन भी करा दिया जाता है, तब भी विद्यालय में छात्रों के गैरहाजिर रहने की समस्या बनी रहती है। इसके अतिरिक्त आमतौर पर अशिक्षित या कम पढ़े-लिखे माता-पिता विद्यालय तक आने में संकोच करते हैं। इस समस्या को सामुदायिक सहभागिता और सामुदायिक जागरूकता के जरिये सुलझाया जा सकता है। इसके लिये यदि विद्यालय में समय-समय पर जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन, अभिभावकों का सम्मान, सामाजिक उत्थान के लिये सरकारी कार्यक्रमों की जानकारी देने जैसे प्रयास किये जायें तो स्थानीय लोगों और विद्यालय के बीच एक रिश्ता कायम होता है, जिससे बहुत सी समस्याएं दूर हो जाती हैं और परस्पर लाभ मिलता है। प्रस्तुत नवाचार इसी दिशा में एक कदम है।

नवाचारक

1. **सुशील कुमार**, प्रा॰ वि॰ गाजीपुर कुतुब प्रथम, नजीवाबाद, बिजनौर
2. **गरिमा,** प्रा॰ वि॰ करपिया, मसौली, बाराबंकी
3. **पुष्पा कुमारी**, प्रा॰ वि॰ नगला सुर्जन, मोहम्मदाबाद, फर्रूखाबाद
4. **बीना सिंह,** प्रा॰ वि॰, मूंघी जामों, अमेठी
5. **सोनिया रानी चौहान**, पू॰ प्रा॰ वि॰ अब्दुल्लापुर लेदा, ठाकुरद्वारा, मुरादाबाद
6. **चम्पा सिंह**, पू॰ प्रा॰ वि॰ जंगल कौड़िया, गोरखपुर

नवाचार के क्षेत्र

1. सामुदायिक जागरूकता में लाभदायक।
2. शिक्षा में अभिभावकों की भागीदारी में वृद्धि।
3. छात्राओं के लिए अधिक अनुकूल एवं सहयोगी वातावरण।

किन विद्यालयों में उपयुक्त है : प्रत्येक विद्यालय एवं जनसमुदाय में।

नवाचार का सार

1. निरक्षर ग्रामीण समुदाय विद्यालयों की गतिविधियों में रुचि न होने के कारण उससे आसानी से नहीं जुड़ता; फलस्वरूप शिक्षा और उसके महत्व को न तो पूरी तरह समझ पाता है न ही अपने बच्चों को विद्यालय जाने की ओर प्रेरित करता है।
2. एक जागरूक समुदाय, सामाजिक परिवेश में सकारात्मक भूमिका निभाता है और शिक्षा के महत्व को समझता है।

कार्यान्वन

योजना

1. सामुदायिक जागरूकता के प्रति सोचना, विभिन्न अभियानों जैसे– स्वच्छ भारत, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ आदि के संचालन के विषय में सोचना।

2. इन कार्यक्रमों की सूचना मूलभूत स्तर तक पहुंचाने का भी प्रबंध करना आवश्यक है जैसे— ग्राम पंचायत, ग्राम सेवक, ग्राम प्रधान और आशा कार्यकर्ता के माध्यम से।

समय सीमा एवं दिवस

1. अभिभावक-शिक्षक बैठक, विद्यालय में किसी भी एक चुने हुए दिन पर अनुकूल समय के अनुसार की जा सकती है।
2. समुदाय को जागरुक करने हेतु नियमित रूप से कार्यक्रम आयोजित किये जा सकते हैं।

सामग्री

1. सामुदायिक जागरूकता हेतु आवश्यक शिक्षण सामग्री, जैसे– चार्ट पेपर, विज्ञान पर आधारित जादू के कार्यक्रम की सामग्री।
2. कल्याणकारी योजनाओं के आदेश, जिला तहसील से उपलब्ध करवाना। इसके लिये समाचार पत्र की भी सहायता ली जा सकती है।

उदाहरण

बेटी जन्मोत्सव

बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ की तरह ही बेटी-जन्मोत्सव भी मनाया जाता है, जिसके अन्तर्गत एक समूह में शिक्षिका, बेटी पैदा होने वाले घर जाकर, माता व अन्य लोगों को बधाई देती हैं। इससे पूरे परिवार में एक खुशी का माहौल उत्पन्न होता है तथा बेटी की माता को परिवार या समुदाय से हीनभावना या अन्य किसी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता।

सुपर मॉम

अनुशासन, साफ-सफाई, शिक्षा और समयानुसार विद्यालय पहुंचने जैसे मापदंडो पर खरा उतरने वाले छात्रों की माताओं को सम्मानित किया जाता है। प्रति माह निर्धारित मापदंडों को मानक बनाकर एक छात्र की मां का चयन कर उन्हें विद्यालय में सुपर मॉम का ताज पहनाया जाता है। नोटिस बोर्ड पर चयनित सुपर मॉम का नाम अंकित किया जाता है। विद्यालय के स्तर पर छात्र अपनी माता को सम्मानित होते देख प्रसन्न होते हैं तथा समुदाय के समक्ष एक महिला का सम्मान, महिला के प्रति समाज के दृष्टिकोण को भी बदलता है। यह शेष माताओं को भी अच्छा करने के लिये प्रेरित करता है और उन्हें प्रगति के पथ पर अग्रसर करता है।

वृक्षारोपण

माह के अंतिम कार्यदिवस पर उस माह में आने वाले सभी छात्र-छात्राओं का जन्मदिन मनाया जाता है। इस कार्यक्रम में छात्रों के माता-पिता को भी आमंत्रित किया जाता है। छात्र के जन्मदिन पर उससे वृक्षारोपण कराया जाता है और रोपित वृक्ष का वह छात्र संरक्षक बनाया जाता है। इससे उसे प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी का एहसास भी होता है। विद्यालय द्वारा जन्मदिन मनाये जाने से अभिभावक व छात्र विद्यालय से जुड़ाव महसूस करते हैं और इससे अभिभावकों की विद्यालय मे भागीदारी भी बढ़ती है।

अंधविश्वास नहीं विज्ञान

अक्सर देखा गया है कि गांव में जनसमुदाय, ढोंगी बाबाओं के चमत्कार के नाम पर भ्रमित करने वाले लोगों के झांसे में आ जाते हैं। यद्यपि ये विज्ञान पर आधारित क्रियाकलापों को ही चमत्कार का नाम देते हैं, लेकिन लोग

इनसे फिर भी भ्रमित हो जाते हैं। नियमित रूप से समुदाय को अंधविश्वास से जगाने हेतु कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं और समुदाय को चमत्कार कहे जाने वाले इन क्रियाओं का सही आधार बताया जाता है। जैसे– नींबू को काटने से रक्त रूपी पदार्थ के निकलने का कारण बताना। विज्ञान पर आधारित वायु के दाब से पानी रुकने या चलने का सही कारण बताना।

प्रौढ़ शिक्षा

जहां माता-पिता हस्ताक्षर करने में भी असमर्थ हैं, वहां छात्रों को प्रतियोगिता के माध्यम से प्रेरित किया जा रहा है कि वह अपने अशिक्षित अभिभावकों को पहले हस्ताक्षर करना सिखायें तथा उसके उपरांत यदि संभव हो तो शिक्षक द्वारा विशेष रूप से अभिभावकों के लिये बनाये गये पाठ्यक्रम को उन्हें पढ़ाएं तथा शिक्षा की ओर उन्हें अग्रसर करें। इस कार्यक्रम में सफल छात्रों एवं अभिभावकों को सम्मानित भी किया जाता है।

सरकारी योजना

अभिभावकों को विद्यालय की ओर आकर्षित करने हेतु उन्हें केंद्र व राज्य सरकार की कल्याणकारी योजनाओं से अवगत करवाया जाता है, जिससे अशिक्षित वर्ग अपने उत्थान के बारे में सोच पाता है। जैसे– शासन द्वारा शुरू की गयी समाजवादी पेंशन योजना, जनधन योजना, पल्स पोलियो अभियान व ऐसी अन्य योजनाएं, विद्यालय के माध्यम से हर घर तक पहुंचाना ताकि सामाजिक उत्थान में विद्यालय का भी योगदान हो।

नवाचार के लाभ

1. एक जागरूक अभिभावक न केवल समाज में सकारात्मक भूमिका निभाता है बल्कि शेष समुदाय को शिक्षा का महत्व समझा पाता है।
2. सामाजिक विषयों मे जनसमुदाय भी विद्यालय, ग्राम व देश के लिये सक्रिय कार्य करता है।
3. छात्रों की प्रकृति के प्रति जागरूकता बढ़ती है।
4. छात्रों के शैक्षिक विकास स्तर में वृद्धि होती है और उनमें अनुशासन बढ़ता है। छात्रों में मानवीय मूल्यों का विकास होता है और आपसी सामंजस्य भी बढ़ता है। ■